REVIEW OF RESEARCH

भूमण्डलीकरण, मीडिया एवं हिन्दी : चुनौतियां एवं अवसर

डॉ. भारत भूषण

अध्यक्ष , स्नात्तकोतर हिन्दी विभाग , गुरु नानक कालेज, किल्लियांवाली, श्री मुक्तसर साहिब(पंजाब)

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

प्रस्तावना

1980 का दशक विश्व के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण दशक माना जा सकता है जिसका प्रभाव पूरे विश्व में देखा गया। जिसका असर 1990 के बाद भारत में महसूस किया जा सकता है। बड़े बाजारों का खुलना, संचार के माध्यमों का बढ़ना विश्व का बहुत तेजी से संकुचित कर रहा था। हजारों मीलों दूरीयां कुछ ही घंटों में पूरी हो रही थी। परन्तु सबसे महत्वपूर्ण था संचार के माध्यमों में तबदीली का आना। दुनिया के किसी एक कोने की स्थिति एवं खबर को जानने की चाहत दुनिया के दूसरे कोने में महसूस की जा सकती है। फलस्वरुप समाचार पत्रों एवं न्यूज़ चैनलों की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हुई। इन तबदीलियों के चलते भारत में 1998 के बाद केबल टीवी तथा उसके साथ कुछ मनोरंजन के चैनल शुरु हुए, परन्तु सबसे दूरगामी प्रभाव न्यूज चैनलों के देखे जा सकते हैं। इसके साथ–साथ 2001 के बाद भारतीय राजनीति एवं व्यापार से संबंधित लोगों की चेतना तेजी से बदल रही थी। प्रश्न यह है कि इस बदलते विश्व में संचार के नये आयामों में हिन्दी भाषा कोई अहम भूमिका निभा सकती है या नहीं ?

आधुनिक समय में हमें दो तरह के तर्क हिन्दी भाषा की सार्थकता के लिये मिलते हैं। एक मत के अनुसार हिन्दी भाषा का अस्तित्व आधुनिक समय में खतरे में है। इस प्रकार के चिन्तक विदेशी प्रभाव की दुहाई देकर इस बात पर बल देते हैं कि हिन्दी भाषा का अस्तित्व खतरे में है। दूसरा विचार इसके विपरीत मत रखता है कि भूमण्डलीकरण तथा संचार के माध्यम में हिन्दी भाषी लोगों को नए आयाम प्रदान किये हैं। इस प्रकार के चिन्तक भूमण्डलीकरण को चुनौति नहीं बल्कि एक ऐसा अवसर मानते हैं जिसके चलते हिन्दी भाषा विश्व में अपने गौरव को स्थापित कर सकती है। डॉ. चेतना दुबे का मत है कि –''हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा बनने या बनाने में जितनी परेशानी है, उतनी विश्व भाषा बनने या बनाने में नहीं, क्योंकि आज पूरे विश्व में हिन्दी भाषा को जानने वाले आसानी से मिल जाते हैं।''[1] इस प्रकार इस तथ्य को स्पष्ट करने के लिये अन्य चिन्तक भी तर्क देते हैं कि अगर भारत भूमण्डलीकरण का एक बहुत बड़ा बाजार है तो हिन्दी भाषी भारतीय वो साधन है जो इस भाषा को विश्व के कोने–कोने में पहुंचाने में सक्षम है। वह इस बात पर भी बल देते हैं कि दुनियां के विख्यात अंग्रेजी चैनल भारत में आकर हिन्दी भाषी हो गये हैं। आज कोई भारतीय चैनल यूरोप में अपनी धाक जमाने के लिये अंग्रेजी भाषा का सहारा नहीं लेता। इसके विपरीत अंगेजी भाषी चैनल भारत में आकर हिन्दी का सहारा लेते हैं।

अगर समाचार पत्रों की बात करें तो आंकड़ों के अनुसार अंग्रेजी समाचार पत्रों की बिक्री के मुकाबले हिन्दी समाचार पत्रों की बिक्री कई गुणा अधिक है। परन्तु यह सारा चित्र इतना भी अच्छा नहीं, अभी भी कुछ चुनौतियां हिन्दी भाषा के सामने मौजूद हैं जिनको समझना और दूर करने का उपाय ढूंढ़ना प्रस्तुत शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

भारत में हिन्दी भाषा राष्ट्रीय भाषा होने के बावजूद शैक्षणिक संस्थानों में अनदेखी का शिकार है। अधिकतर महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय कम स्टाफ, प्रशिक्षण की कमी तथा स्वायततः के अभाव में उन पुराने विष्यों और साधनों को

अपनाते हैं जो कि सन् 1950 के आसपास तो कामयाब थे परन्तु आधुनिक समय में अपनी प्रासंगिक्ता के लिये नये आयामों की आवश्यकता में है। अगर इन महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों का सर्वेक्षण किया जाए तो वहां पर तकनीकी विषयों के लिये तो सभी सहूलतें उपलब्ध हैं परन्तु हिन्दी भाषा के उच्चारण में नए शब्द कोषों की संरचना का अभाव अपनी शब्दावली को छोड़ अंग्रेजी शब्दावली पर निर्भर है। इस विषय में एक कटु सत्य है कि सिर्फ वही भाषा जीवित रहती है जो समय के साथ बदलती रहे। श्रृंगारिक भाषा का प्रयोग तो पूजा–पाठ, कर्म–काण्ड अथवा आयोजनो तक ही सीमित रहता है। इसलिये हिन्दी भाषा को सबसे बड़ी चुनौति व्यवहारिक बनाने की है ना कि श्रृंगारिक। जिसके लिये महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों को भाषायी अनुसंधान के लिये एक अलग प्रकार के प्रयास की भी आवश्यकता है। बेशक यूजीसी जैसे संस्थान महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों को अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने के लिये विभिन्न–विभिन्न वर्कशाप, पुनःश्च पाठ्यक्रमों पर भेजने का प्रबन्ध करती है परन्तु इनमें भी अधिकतर ठोस पुराने तरीकों का प्रयोग करते हैं जिसके फलस्वरुप भाषा के उच्चारण अथवा लेखन में इसकी प्रासंगिकता तथा छात्रों तक इस ट्रेनिंग के लाभ पहुंचाने के तरीके बताने में असमर्थ रही है जिसकी वजह से कागजी कार्यवाही तथा जमीनी हकीकत में एक बहुत बड़ी दरार रह गई है जो कि छात्रों को हतोत्साहित तथा सीमित सोच के दायरे में उलझाकर छोड़ देती है।

भूमण्डलीकरण तथा संचार के साधनों में आई क्रान्ति के फलस्वरुप हिन्दी भाषा को काफी उत्साह मिला है। ''भारत में केवल 9 प्रतिशत न्यूज चैनल थे जिनमें से प्राईवेट न्यूज चैनलों ने अंग्रेजी का हिस्सा प्रमुख था। परन्तु उसी समय के सर्वे के अनुसार इन न्यूज चैनलों की पहुंच भी 1.19 प्रतिशत लोगों तक ही सीमित थी। मार्किटिंग आवश्यकता को समझते हुए 2003 के बाद हिन्दी भाषी न्यूज चैनलों की बढ़ौतरी हुई। 2010 में भारत के प्रमुख 122 न्यूज चैनलों में हिन्दी भाषी न्यूज चैनलों की प्रभुता थी।''[2] इस प्रकार अगर भारत में समाचार पत्रों की बात की जाए तो उसमें भी हिन्दी समाचार पत्रों के डेली रीडरशिप, IRS (इंडियन रीडरशिप सर्वे) 2014 के हिसाब से निम्नलिखित समाचार पत्र भारत में प्रमुख हैं''[3] –

दैनिक जागरण	हिन्दी	राष्ट्रीय	15.529 मिलियन
हिन्दुस्तान	हिन्दी	राष्ट्रीय	14.246 मिलियन
दैनिक भास्कर	हिन्दी	राष्ट्रीय	12.875 मिलियन

इस प्रकार प्रमुख तीन समाचार पत्र हिन्दी भाषा के हैं जबकि अंग्रेजी भषी समाचार पत्र टाईम्ज ऑफ इंडिया 7.254 मिलियन की गिणती से काफी पीछे है। इसी सर्वे के अनुसार प्रमुख 10 समाचार पत्रों में पांच हिन्दी में एक अंगेजी में और बाकि क्षेत्रीय भाषाओं में है। एक रोचक पहलू यह भी है कि हिन्दी समाचार पत्रों की सर्कुलेशन अंग्रेजी समाचार पत्रों के मुकाबले 5 गुणा है। आई.आर.एस. के सर्वे के अनुसार मैगजीन के मामले में भी प्रथम 10 में से पांच हिन्दी में हैं जिसमें प्रतियोगिता दर्पण 1.457 मिलियन रीडरशिप के साथ तीसरे स्थान पर है।[4]

इन आंकड़ों से एक बात तो स्पष्ट है कि संचार माध्यम तथा प्रतियोगिता में हिन्दी भाषा को भारत में अंग्रेजी के मुकाबले अधिक लाभ पहुंचा है क्योंकि अधिकतर लोगों की पसंद की पहल में हिन्दी न्यूज चैनल एवं समाचार पत्रों को हिन्दी भाषी लोगों की ओर आकर्षित किया है तथा इस क्षेत्र में उन लोगों के लिये नए अवसर प्रदान किये हैं जो अंग्रेजी नहीं समझते। उदाहरण स्वरुप हिन्दी वर्चस्व को समझते हुए आई.एस. स्वामीनाथन ने कहा है (जो कि याहू.कॉम से सम्बन्ध रखते हैं) –कि हिन्दी भाषा में काम करने वालों की संख्या बढ़ते देख कर याहू ने अपनी वैबसाईट के हिन्दी संस्करण की भी शुरुआत की है। यही नहीं बिलगेटस ने तो हिन्दी भाषा को आने वाले समय की एक वैज्ञानिक भाषा कहा है।[5] इस तर्क को हम इस प्रकार भी समझ सकते हैं कि भूमण्डलीकरण में बहुत बड़ी मात्रा में भारतीय लोगों को विश्व के कोने–कोने में पहुंचाया है। अंग्रेजी शब्द DIASPORA के अधीन आने वाले यह लोग आधुनिक अर्थों में नागरिक तो विभिन्न देशों के हैं परन्तु सम्याचारिक रुप से यह भारत तथा भारतीय भाषा से जुड़े हुए हैं। भारत के आर्थिक सशक्तिकरण तथा विश्व के मानचित्र के दबदबे में इन लोगों को भारतीय सम्याचार तथा भाषाओं की तरफ आकर्षित किया है जिसके फलस्वरुप इनकी मांग को पूरा करते हुए हिन्दी चैनल न केवल भारत बल्कि यूरोप, अमरीका, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका इत्यादि देशों तक प्रसारिक किये जा रहे हैं। हिन्दी के प्रमुख न्यूज चैनल जिनका पूरे विश्व में प्रचार

किया जाता है – आजतक, इंडिया टीवी, स्टार न्यूज इत्यादि प्रमुख हैं। इसी प्रकार जहां हिन्दी के समाचार पत्र विश्व के विभिन्न कोनो–कोनों तक पहुंचाने मुश्किल थे वहीं अब इंटरनैट के माध्यम से ई–पेपर के रुप में विश्व के किसी भी कोने में उपलब्ध हैं। ऐसे वातावरण में एक बात तो स्पष्ट है कि आधुनिक समय में हिन्दी भाषी पत्रकारिता का इलैक्ट्रोनिक मीडिया तथा प्रिंट मीडिया में वर्चस्व एवं मांग भी है ओर कोई ऐसा कारण नहीं है कि यह मांग भविष्य में कम हो क्योंकि जिस भाषा की पढ़ाई विश्व के 136 विश्वविद्यालयों में हो रह है। पचास से अधिक देश जिस भाषा का प्रयोग किसी न किसी रुप में कर रहे हों एवं जिसको बोलने वालों की संख्या 170 करोड़ के लगभग पहुंच चुकी हो।[6] ऐसी भाषा को अन्तर्राष्ट्रिय भाषाओं में शामिल करने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। दूसरे अर्थों में भारत में 40 प्रतिशत से अधिक युवक अपने योवन की दहलीज पर हैं जो कि आने वाले समय में भारतीय अर्थव्यवस्था तथा संचार में मुख्य भूमिका निभाने वाले हैं। शायद इन्हीं अवसरों को पहचानते हुए दुनिया के अनेक देशों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा को शुरु किया गया है। इसी प्रकार विदेशी छात्रों का हिन्दी विषय पढ़ना इस बात का प्रमाण है कि आने वाला समय हिन्दी भाषा का स्वर्णिम युग हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. चेतना दुबे : विश्व मंच में पहचान बनाती हिन्दी, मालती, अन्तर्राष्ट्रिय ऑन लाईन हिन्दी पत्रिका, अंक जनवरी–जून 2014।
2. Source : TAM Peoplemeter System, Market : All India, Target Group : CS 4+ yrs.
3. इण्डियन रीडरशिप सर्वे 2014
4. वही
5. हिन्दी भाषिकी, भारतीय संस्कृति की संरक्षक, 2011.
6. हिन्दी भाषिकी, राष्ट्र की एकता और अखण्डता का आधार, 14 सितम्बर 2010।

LBP PUBLICATIONS